मनुष्य बनो

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन.

क्षक

याल फकीर चन्दजी महारा

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २७ | अश्विनि सं० २०३३ वि० नवम्बर १९७६ | संख्या २

चेतावनी

पिया मिलन की आस, रहों कब लों खड़ी।
ऊँचे चढ़ि नहिं जाय, मनें लज्जा भरी ॥१॥
पांव नहीं ठहराय, चढ़ूं गिर गिर पड़ूं।
फिरि फिरि चढ़हुं सम्हारि, चरन आगे धरूँ ॥२॥
अंग अंग थहराय, तो बहु विधि डरि रहूं।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम में भुलि रहूं ॥३॥
निपट वारि अनारि, तो भीनी गैल है।
अटपट चाल तुम्हारि, मिलन कस होइ है ॥४॥
तजो कुमति विकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु शब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये ॥५॥
अन्तर पट दे खोल, सब उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलें तोहि बावरी ॥६॥

सम्पादकीय---

जैसा कि सन्त कहते है

हर मनुष्य अपने जीवन में शान्ति चाहता है मगर कर्म बन्धन के कारण प्राणी मात्र राग द्वेष, क्रोध, मोह, लालच के जाल में घिरा रहता है। उसको अपने स्वरूप का यद्यपि ज्ञान न होने के कारण माया उसको संसार में भ्रमण कराती रहती है। असली जीवन के सुख से वह कोसों दूर हो जाता है।

जब मनुष्य इन बन्धनों में जकड़ जाता है तब उसको किसी के सहारे की जरूरत होती है। उस दशा में संस्कार आधीन हर मनुष्य अनेक प्रकार के माध्यमों से शान्ति की खोज करने लग जाते है। कोई पूजा, पाठ, कोई सुमिरन ध्यान, यज्ञ, जप, तप का मार्ग अपनाता है तथा कुछ गुरुओं की शरण में जाते हैं। इसके लिये सनातन धर्म में अनेक त्यौहार व पर्वो की भी व्यवस्था हमारे ऋषियों ने करदी थी। जिससे हर प्राणी इस माया के वन्धन में रहते हुए भी सांसारिक जीवन में अपने इष्ट को समर्पित करते हुए जीवन को सुखमय बना सके।

अनेक महापुरुषों ने प्राणी के लिये और भी सुगम मार्गों का भी उपदेश दिया है जिस प्रकार कठिन परिस्थितियों में भी क्रोध न करना तथा क्षमाशील होना। मनको मलिन न करके पवित्र विचारों से अपने जीवन का पोषण करना। ज्ञानवान, धनवान ऐश्वर्यवान, रूपवान, बलवान होते हुए भी अहंकार न करना और न ही अभिमानी होना। अपने दोषों को न छिपाकर उनको स्वीकार करना। सत्य का पालन करना तथा असत्य भाषी कभी न होना। शरीर को साफ एवं पवित्र रखना। इन्द्रियों को अनावश्यक विषयों से मोड़ कर राग, द्वेष रहित होना यह सब शान्ति प्राप्त करने के मार्ग हैं। इसके अतिरिक्त महान त्याग को सन्तों ने कहा है कि जिस

मनुष्य को किसी मान या बढ़ाई की इच्छा नहीं है तथा बदले में कुछ पाने की भी भावना नहीं है वह व्यक्ति जो भी दान करता है वह दान उसका महात्याग होता है।

आत्म चिन्तन में विलीन रहना तथा अपनी आवश्यकताओं को कम से कम रखना भी मनुष्य को आत्मशान्ति की ओर अग्रसर करता है। जीवन में ब्रह्मचर्य भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण है काम का जीतना ही ब्रह्मचर्य है। उससे तेज, ओज, व जीवन की सार्थकता प्राप्त होती है।

अपने जीवन को शान्ति मय तथा सुख मय बनाओ, यही सन्तों का उपदेश है।

प्रभूदयाल मीतल

पाठकों से एक निवेदन

दाता दयाल की आज्ञानुसार "मनुष्य बनो" पत्रिका सेवामें पुनः सक्रिय होगई है। यद्यपि हमारे पूज्य पिताजी के स्वर्गवास होने के पश्चात इस पत्रिका के प्रकाशन में कुछ समय के लिये रुकावट हो गई थी। मगर सरकार से स्वीकृति मिलने के पश्चात इसका संचालन पुनः अब आपकी सेवा में प्रारम्भ होगया है।

आप सभी जानते हैं कि इसका वार्षिक मूल्य ५)२५ रुपया है जो आजकल के समय में नाम मात्र है इससे न तो कागज की ही और न छपाई की ही कीमत निकलती है। इस पर भी पाठकों से केवल ४० फीसदी चन्दा इसको प्राप्त होता है। हम बार बार पाठकों से निवेदन करते रहते हैं मगर अन्त में परिणाम फिर भी निराशा जनक होता है।

हम आपसे यह निवेदन अवश्य करेंगे कि कृपया अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द प्रकाशक के नाम भेजने की कृपा करें।

हमारे पिताजी किस प्रकार इसको चलाते थे। पत्रिका की आर्थिक कठिनाई वह किस प्रकार हल करते थे यह रहस्य तो हमको ज्ञात नहीं है। हमने दाता दयाल को अपनी कठिनाई से अवगत कराया है और उनसे आज्ञा लेली है कि इस पत्रिका को कुछ और उपलब्धी दी जाय तथा आर्थिक दृष्टि से संतोष जनक बनाया जाय इसके लिये इस पत्रिका में विज्ञापन भी निकाले जांय।

व्यापारी बन्धुओं से इसके लिये निवेदन है कि आपकी पत्रिका में आपके व्यवसाय को भी स्थान मिल सके तथा देश के भिन्न भिन्न भागों में उनकी ख्याति हम पहुँचा सकें यह पत्रिका आपकी सेवा के लिये तैयार हैं विज्ञापन दर इस प्रकार है।

आधा पृष्ठ ५०) माहवार तथा ५००) प्रति वर्ष
पूरा पृष्ठ १००) माहवार तथा १०००) प्रति वर्ष

विज्ञापन की राशि चैक के जरिये व्यवस्थापक के नाम भेजी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त जो भी सतसंगी आर्थिक दृष्टि से इसकी सहायता करना चाहें हम उनके आभारी रहेंगे।

हम आपकी सेवा करते रहें इसके लिये आप सब का आशीर्वाद हमको मिलता रहें यही कामना है।

यह पत्रिका दातादयाल की निधि है इसको दिन दूना बढ़ाना आपका भी कर्तव्य है।

श्रीमती सुधा मीतल
व्यवस्थापक

॥ मनुष्य बनो ॥

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर

(१३ अक्टूबर १९७६)

बचपन से राम को मिलने की इच्छा थी, इसी सिलसिले में मौज दाता जी के चरणों में लेगई—हुजूर महाराज का शब्द सुना—कहा गया है गुरु करें जगत उद्धार—मैं अपने आप से कहता हूं कि यदि फकीरचन्द तू सन्तमत का पक्ष करेगा तो कर्म भोग से नहीं छूटेगा—तेरे को एक दिन मर जाना है—क्या राधास्वामी मत का जो गुरु है वह जगत से निवेड़ा कर सकता है ? यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं—पुरुषोत्तमदास मेरे गुरु भाई मुझसे बसरा बगदाद में पूछा करते थे कि मास्टर जी हमें भी कुछ बताओ—आज बताता हूं—मैं कहता हूं कि हाँ सन्तमत का गुरु जगत उद्धार कर सकता है—बशर्ते कि कोई उसकी बात को सुने और गुने—यदि कोई सिर्फ सुनता है उस पर बिचार करके अमल नहीं करता तो कुछ नहीं होगा। अपनी बात का यकीन कराना यह गुरु का काम है। वह गुरु गुरु नहीं जो अपनी बात का यकीन नहीं करा सकता। सन्तमत भी वही बात कहता है व जो हुजूर महाराज कहते हैं—वही सनातन धर्म भी बताता है।

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा।
भेद बाद है क्रम का सार ॥

कहते हैं माया और ब्रह्म का भेद है—गुरु भी भेद बताता है, मुझे भेद का पता नहीं लगता था—मैंने बसरा बगदाद में बहुत साधन अभ्यास किया बड़ी मेहनत की है, अगर भेद का पता लग गया होता तो मैं इतना जप तप साधन क्यों करता ? उस ब्रह्म और

माया के भेद का पता मुझे तब लगा जब से मुझे आप लोगों ने बताया कि मेरा रूप तुम्हें प्रगट होकर तुम्हारी अनेक प्रकार से सहायता करता है—वास्तव में मुझे पता नहीं होता और लोग जाग्रत में, सपने में, समाधी में मुझे देखते हैं—इससे मुझे भेद का पता लगा कि यह तो माया का रूप है, जो है नहीं, किन्तु भाषता है हिन्दू भी यही कहते हैं कि माया है नहीं भासती है। मुझे माया का रूप तुम लोगों से पता लगा मैं नहीं जाता जो तुममें प्रगट होता है वह है नहीं तुमको भासता है। वह तो सिर्फ संस्कार है। जो वस्तु विचार में, अन्तर में, तथा बाहर है या रूप में है, है नहीं भासती है माया है। इस प्रकार माया के रूप का पता लगा। अब ब्रह्म क्या है ? यह देखना है। जब प्रकाशरूपी आत्मा शरीर में आती है वह फैलता है, हममें मन बुद्धि चित्त अहंकार पैदा हो जाते हैं। जिस प्रकार दरख्त जमीन पर बनते हैं—पहले बीज जमीन में होता है—सूर्य की किरण से अंकुर निकलता है, धीरे धीरे पौधा बढ़ कर वृक्ष हो जाता है फिर वह फलने फूलने लगता है। यदि प्रकाश नहीं हो तो वह नहीं फैलेगा—न वह फल ही देगा—इसी प्रकार वह ब्रह्म-रूपी प्रकाश या आत्मा देह में आता है तब माया पैदा होती है—जो मैंने समझा वही कहता हूं—दावा नहीं करता कि मैं ठीक हूं।

राधास्वामी मत या सन्तमत है क्या बला ? इसको जानने में जीवन गुजरा है, बुजुर्गी गुरु की है वह सतसंग कराता है, शब्द योग बताता है, शिष्य उसकी बात को सुनता है यह बाहरी शब्द योग है। अगर शिष्य को कामिल गुरू नहीं मिला हुआ है और वह अन्तर का साधन करता है तो वह अहंकार में आजायगा, वह सिर्फ माया में फँस जायगा—सिर्फ अन्तर का साधन पूरा काम नहीं करेगा। बाहर का सतसंग तभी समझोगे जब अन्तर का साधन करोगे—अगर तुम्हारा अन्तर का साधन नहीं है तो मेरा सतसंग भी पूरा लाभकारी नहीं होगा न तुम सतसंग को समझोगे। राधा-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

स्वामी मत का गुरु कैसे जीव का उद्धार करता है ?

गुरु प्यारे जग उद्धार ।

उद्धार याने इधर से उधर करना – डूबते हुए को बचाना। हमारे अन्तर की वह वस्तु जो प्रकाश को देखती व शब्द को सुनती है माया को देखती है व माया की साक्षी है—माया को जानती है—वह फँसी हुई है ब्रह्म व माया के चक्कर में—क्योंकि प्रकाशरूपी आत्मा देह में आता है तो माया पैदा होती है वह चीज जो हमारे अन्तर में रहकर माया के खेल देखती है प्रकाश भी देखती है—माया को समझती भी है; अगर कोई गुरु मिल जावे तो वो बताता है कि न हम प्रकाशरूपी ब्रह्म हैं न प्रकाश के कारण पैदा होने वाले मन चित्त बुद्धी अहंकार के संस्कार जो माया है वह हैं हम तो ब्रह्म माया के साक्षी ही हैं—जो हमारे देह में साक्षी है वह ब्रह्म व माया से न्यारी हैं वह साक्षी ही ब्रह्म माया के खेल में फँसी हुई है सन्त इस ब्रह्म को काल कहते हैं—निरंजन भगवान कहते हैं—जब तक प्रकाश से उदासी होती रहती है इसमें फँस कर माया को ही सत्य मानती रहती है इधर ही उसकी द्रष्टी की सृष्टी रहती है—जब गुरु मिल जाता है तो वह उधर की बात करता है यानी कहता है।

ब्रह्म माया का भेद है न्यारा—

इस माया और ब्रह्म पर लोगों ने ढेरों किताबें लिखदीं—ब्रह्म सूत्र भी लिख दिया—मैं जगत में सन्त सतगुरु बनकर आया हूं—मैं राधास्वामी दयाल या सन्तमत का अगम वरदार हूं – किसी में ताकत हो तो मेरा खंडन करे मैं चेलेंज करता हूं।

जो कोई इनका रूप पिछाने ।
भेद बाद है धर्म का सार ।।

मैं आपको ब्रह्म माया का रूप बताने की कोशिश कर रहा हूं—किन्तु मेरी बात को वे ही समझेंगे जो संसार के दु:खों से दुखी है व उनसे बचना चाहते हैं—संसार से मुक्ति की चाह वालों के लिये

ही यह मार्ग है=दूसरा कोई इधर आयगा ही नहीं—यह सन्त मत है ही संसार के दुखियो के लिये दूसरों के लिये नहीं।

गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार
जीवन को अति दुखी देख कर, वार न पार

गुरु ने जीवों को दुखी देखा तो दुख का कारण प्रगट करके जीवों को दुख से बचने की हिदायत की जो दुखी नहीं अपने को मानता उसके लिये सन्तमत नहीं है—जो दुखी नहीं हैं उन्हें नाम क्यों दिया जावे—मैं नाम नहीं देता, तुम लोग यहां आये हो क्या नाम के अधिकारी हो—तुम तो पुत्रों की वासना से, लड़कियों की शादी के लिये, धन के लिये आये हो क्या नाम दूँ तुम्हें—सन्तमत कहता है ब्रह्म और माया को जानो तब दुख कम होगा—जो अपने आपको मैं ब्रह्म हूं कहते हैं अहं ब्रह्मास्मि कहते हैं वे गलती पर हैं—ब्रह्म का पुजारी जन्म मरण से नहीं बच सकता। जन्म मरण सिफ मृत्युलोक का ही काम नहीं है, पित्रलोक है, विष्णु लोक है, शिव लोक है, अनेकानेक लोक है—सृष्टी अनन्त है, सभी जगह जन्म मरण है। प्रकाश का काम तो फैलना है—फैलने में विस्तार में मुक्ती कहां? पुरुषोत्तमदास! जब तक कोई अपने को ब्रह्म व माया से अलहदा नहीं कर लेता उसका काम नहीं बनता।

रूप पिछानो!

ब्रह्म माया के रूप को पहचानने के लिये बाहर के गुरू से संस्कार लेना जरूरी है—अन्तर के रूप रंग बातचीत को छोड़ना पड़ेगा तभी पहचानोगे—मैं भी दाताजी के रूप के साथ प्रेम करता था—उनके प्रेम में मैं बसरे बगदाद में मस्त होकर नाचा करता था—तब मैं माया में था, सद्गुरु ने मुझे भेद दिया—यह गुरुवाई भेद देने के लिये ही दी थी—मैं अब किसे नाम दूँ? कौन अधिकारी है?

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

॥ मनुष्य बनो ॥

विन गुरु ज्ञान की गम नहीं ।
गुरु ज्ञान का आधारा ॥

जो सचमुच जगत से बचना चाहते हैं वे अमल करेंगे अन्तर में साधन करेंगे और वे ही पार जावेंगे ।

सारा दृष्टी सृष्टी का सकल पसारा ।

मैं भेद देता हूं कि जो अन्तर में साक्षी हैं यह सृष्टी उसकी ही द्रष्टी की है—यदि यह साक्षी दुनियां का ध्यान करेगी तो दुनियांदार बनेगी, माया का ध्यान करेगी तो मायावादी बन जायगी—प्रकाश का ध्यान करेगी ब्रह्मवादीं बन जायगी । यह तो अपना अख्त्यार है जिधर जाना चाहोगे उधर पहुंच जाओगे । तुम ब्रह्म नहीं, तुम माया नहीं । तुम इनसे न्यारे हो । न्यारौ जो है सुरत है—वही परमतत्व आधार का अंश है । ब्रह्म का इष्ट सन्तों का नहीं है—

भक्ति की दृष्टी जब आई, ईश्वरमय होगई सृष्टी ।

तुम्हारे ही ख्याल की ताकत है, तुम जिधर चाहो लगा दो—गुण का, सचाई का तो कोई ग्राहक नहीं है नुक्ताचीनी करने वाले ऐब देखने वाले वहुत हैं—

मार्मेराज के सतसंग में जाकर उसकी वाणी को समझो नहीं तो अभ्यास व्यर्थ है—

शब्द नाव लेकर आये ।

कभी मैं अपने आप से पूछता हूं कि तू अपने आपको परमदयाल कहता है क्या यह ठीक है ? हां मैं ठीक हूं । मैं वह रहस्य बतात हूं जो पिछले सन्तों ने खास चेले को बताकर आगे उस रहस्य क बताने से चेलों को रोक दिया । मेरी राय में उन्होंने बुरा नहीं किय क्योंकि जोव अधिकारी नहीं हैं—मैं भी जानता हूं कि जीव अधि कारी नहीं हैं । मैं तो अपने प्रण के कारण अनुभव कहता हूं—रहस्य पर पर्दा रख कर अब हजारहा गुरु बने हैं—और गद्दियों लिये मुकद्दमेबाजी होती है । जनता को पता नहीं कि वह किसे

माने। वह तो फकीर को, चरनसिंहजी को और कोई दूसरे गुरुओं को अपने अज्ञान से मान रही है—जीव तो अज्ञानी है उनको पता नहीं कि वे क्या करें? रहस्य मैं इसलिये खोलता हूं कि निबल, अबल, अज्ञानी जीव फायदा उठाना चाहें तो उठालें:

तट के निकट खींच लाई।

मेरी संगत में आते हो—वहां जाने की इच्छा है तो अपने अन्तर में जाओ यदि अन्तर में नहीं जाते तो मेरा सतसंग सिर्फ बकवास है। कोई फायदा नहीं होगा। हजूर महाराज स्वामीजी के बारे में कह रहे हैं—गुरु प्यारे ने किया जग उद्धार। हुजूर महाराज सूख कर कांटा होगये थे। ५ साल देह की सुध नहीं ली—उन्होंने १९५७ के गदर में देखा कि मजहब के नाम पर क्या हुआ। उसका उन पर असर हुआ। उन्होंने वेदान्ती, कर्मकांडी, नमाजी, सनातनियों को समझा मगर उन्हें रहस्य का पता नहीं लगा था। उन्हें स्वामीजी ने समझाया या इसलिये उनके गुण गाते हैं—मैं भी कहता हूं कि इस शिक्षा को समझे बगैर भ्रम न जायेंगे—न शांति मिलेगी। बाहर का कोई, राम न कोई मुहम्मद आता है, भ्रम में आकर इन्सानी नसल फिरकों, पंथों, मजहबों में बट गई, यह मेरा जिंदगी का तर्जुबा है साहनी साहब, आप लोग तथा सन्त हीरासिंह आये हैं—मैं गुरु रूप के उद्धार होने के ख्याल से यह सतसंग करा रहा हूं—जो कुछ मैंने कहा है कि हमारे अन्तर कोई वस्तु है जो शारीरिक, मानसिक व आत्मिक भान तथा सत्व के भान की साक्षी है और वह काल माया अथवा ब्रह्म माया के चक्कर में आई हुई है—जब तक उसे यकीन नहीं होता कि कुछ औरतें से जो कुछ वह देखती सुनती. समझती है, वह और ही है तब तक इस चक्कर से बरी नहीं हो सकती। उसे संसार में कभी शांति नहीं।

मुझे दाता दयालजी ने सन १९२१ में एक शब्द में यह बात समझाई थी वह यहां लिखता हूं—

यह जग नाटकशाला साधो
यह जग नाटक शाला।
राजा रंक फकीर औलिया दृश्य विचित्र विशाला।
कोई ओढ़े शाल दुशाला कोई सिर कंबल काला।
सुरत ने अद्भुत भेष बनाये नाचे नाच रसाला।
गावें, भावें दिखावें छिन छिन खेले खेल रसाला।
ब्रह्मा वेद से रचा जगत को विष्णु गदा ले पाला।
शिव संहार का साज सजावें साथ भूत बेताला।
नाचे कमला दुर्गा सारद काली छवि विकराला।
सावित्री का राग गायत्री फैन वैन का लाला।

उन्होंने जाला लिखा है—यह गायत्री का साधन जो करते हो, मंत्र जपते हो, अन्तर में रूप देखते हो यह है क्या ? नाटकशाला ही तो है—तभी तो उन्होंने जाला यानी जाल बताया है।

शंख नाद की धूम मची है डमरू शेर कराला।
रारंग सारंग धजी सरंगी बीन सितार सुहाला।
श्रुत धुन है उद्गीत है बानी ओम ओम का ताला।

जो मनुष्य ॐ ॐ बीन बांसुरी सुनता रहता है, उसकी तो सुरत कैद हुई हुई है—दाता दयाल और व्यास इस शब्द के भाव को समझ सकते हों तो समझो—

ऐ दाता ! तेरी तालीम को कौन समझेगा—मैं तो अपने अभ्यास तथा सतसंग से यही साबित करता हूं कि वह तो साक्षी है वह जब तक शब्द प्रकाश को छोड़ कर निज रूप में नहीं जाती वह तो कैद में है—

श्रोतागण सब सुनने आये मन में कर्म विहाला।

देखो शब्द विहाला है—विहाला का मतलब बेहाल होगा—श्रोतागण सुनने आये—विहाल कौन होता है—कोई विहाल होगया गर्क होगया—क्या वह दशा अच्छी होती है—जाला ताला

विहाला इन शब्दों पर गौर करो।

साधू तो साक्षी बना रहता है उसका कैदी नहीं होता—लोगों से रिश्तेदारों से मिलता है उनका कैदी नहीं होता—यही जीवन-मुक्ती या विदेहगति है—

साधू द्रष्टा साक्षी रूप है, दुख सुख मन से टाला।
जिसने अपना रूप बिसारा, उर उपजा दुःख साला॥

शब्द न सुनाई दिया—प्रकाश न दिखा तो या गुरु रूप नहीं आया तो लोग कहते हैं हाय हम तो मर गये—

साक्षी देखे विमल तमाशा चित्त रहे सुखी सुखाला

अभ्यास करो, अभ्यास के कैदी न बनो—यही राज है खुश रहने का।

भूल भरम में जो कोई आया, सहे कर्म का भाला।

कर्म का भाला दुख मनाने के कारणों में फँस जाना है, तुम लोगों ने सेवा की है उन्हें समझाता हूं—

रैन सपना है जग की लीला, सपना धन और माला।
आंख खुली तब कुछ नहीं दरसा, गुप्त जो देखा भाला।
राधास्वामी सन्त रूप धर आये दीनबन्धु सुदयाला।
प्रेम पियाला हमें पिलाया, सहज किया मतवाला।

आंख खुली शब्द सुना, आँख बन्द शब्द गुम—हम औरत पुत्र दौलत, गुरु, प्रकाश या शब्द के मातहत रहते हैं—सभी गलती पर हैं—दर असल आपके यह आधीन हैं आप इनके आश्रित नहीं—

———

प्रवचन

परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज
(मानवता मन्दिर होशियारपुर, १२-४-७६)

खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया ।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया ।।
करता रहा पुकार, दाद को कहीं न पाया ।
भेख भिखारी जगतगुरु, सब भरमैं माया ।।
शब्द बिना खाली फिरें, सब धोखा खाया ।
अब मिल गये पूरे सतगुरु, उन भेद सुनाया ।।
सुरत सार लखताय के, फिर गगन चढ़ाया ।
गगन मँडल में पहुँचकर, अनहद बजवाया ।।
जपी तपी मौनी बकी; जत जोग चलाया ।
यह मारग कोई न कहे, दुर्लभ दरसाया ।।
धन्य सन्त और सतगुरु, जिन सार बुझाया ।
मन मत जग में फैलिया, गुरुमत नहीं आया ।।
सुरतवन्त बिरले कोई, सब जीव चिताया ।।

मैं बचपन से किसी वस्तु की तलाश में था । जब तक किसी को किसी चीज की तलाश है उसको चैन नहीं । मौज मुझे हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरणों में लेगई । मैं साधारण हिन्दू था और ब्राह्मण था । उन्होंने मुझे सतसंग की शिक्षा दी । मैंने इनकी बाणियां पढ़ीं तो इनमें सबका खण्डन था । हुजूर दातादयालजी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था और उनको मैं छोड़ नहीं सकता था । इसलिये मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा । बैसाखी आई और आप लोग आगये हैं । इस समय गुरुमत का जोर है । राधास्वामीमत के गुरु, हंसा वालों के गुरु, बौद्धों और जैनियों के

गुरु, मुसलमानों के पीर और सिखों के गुरु। सब ही अपना अपना काम कर रहे हैं। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! क्या तुमको चैन मिल गया ?

खोजत रही पिया पंथ, मरम कोई नेक न गाया।
रैन दिवस बेचैन। तरसते जन्म विताया ॥

मैं अपने आप से प्रश्न करता हूं कि फकीर ! तू गुरुमत में आया क्या तुमको चैन मिल गया ? आज कल यह एक आम कहावत है कि गुरु महाराज जी से नाम लेलो तो तुम तर जाओगे। लेकिन मैं यह कहता हूं कि ऐ मानव ! तुम चाहे किसी भी गुरु से नाम लेलो तेरा बेड़ा पार नहीं होगा जब तक कि तुम नियमों पर नहीं चलोगे जो तुमको गुरू बताता है। तुम लोग मुझे गुरू मानते हो। तुम में से कोई किसी जगह से आया है और कोई किसी जगह से। मैं अपनी आत्मा को साफ कर जाना चाहता हूं ताकि मुझ पर गुरु बनने का कोई पाप न रहे। जब तक तुम गुरु की बात पर अमल नहीं करोगे तुमको शान्ति ओर हार्दिक सुख नहीं मिलेगा। मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? मैंने सन १९०५ में नाम लिया था क्या उस समय मुझे शान्ति मिल गई थी ? नहीं। हां हिम्मत और उत्साह मिला था कि शान्ति मिल जायेगी। शान्ति कब मिलती है ? जब तक तुम गुरू के बताये हुए नियमों पर नहीं चलोगे तुमको शान्ति नहीं मिल सकती चाहे तुम किसी को भी गुरू बनालो। अशान्ति क्या है ? चित्त की वृत्ति का किसी स्थान पर टिकाऊ न होना और भटकते रहना। अशान्ति का कारण क्या है ? क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है इसलिये मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं ताकि इस बैसाखी का सत्संग करने का या किताबें लिखने का मुझ पर कोई धोखा या पाप न रहे। जो विषय विकार का जीवन काटता है वह लाख किसी को गुरु मानले उसे शान्ति नहीं मिल सकती। विषय विकार का जीवन मन की वृत्तियों और स्वास्थ्य को बिगाड़ देता है और

जब तक स्वास्थ्य नहीं। शान्ति कैसी ? इसलिये सन्तों ने कहा है—

जहां काम वहां नाम नहीं, जहाँ नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊ ना मिले, एक ठाम इक याम ॥

मैं अपनी आत्मा को साफ रख कर इस संसार से जाना चाहता हूं ताकि मुझे गुरु बनने का कोई पाप न लगे। जब तक कोई आदमी उन नियमों पर नहीं चलेगा जो शान्ति को प्राप्त करने के लिये सन्तो ने बनाये हैं तुम लाख नाम जपो कोई लाभ नहीं होगा। आनन्द और खुशी मिलेगी और कुछ अहंकार भी आजायेगा। इसलिए विषय विकार कम करो। आजकल नौजवान लड़के लड़कियां रोते हैं ? क्यों ? अधिक कारण उनके बचपन की गलत कारियां हैं। जवान होने से पहले ही शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य खो देने के कारण वे अपने स्वास्थ्य को खो बैठते हैं और अशान्त हो जाते हैं। मेरा विवाह १३॥ साल की आयु में हुआ और १५॥ साल की आयु में मैं गृहस्थ में आगया तो मेरे अन्तर अशान्ति का आना आवश्यक था। मैंने १९०५ में नाम लिया। १९१६ तक सिवाय प्रार्थना प्रेम के जज्बे और रोने धोने के और कुछ न मिला क्योंकि मैं काम अधिक भोगता था। फिर बसरेबगदाद गया। वहां बारह साल रहा। स्त्री से अलग रहा। ब्रह्मचर्य की कमी पूर्ण होगई। इसलिये वहाँ मैंने बीनें सुनीं और शब्द भी बहुत सुने। फिर जब वहां से वापिस आया तो दाता दयालजी महाराज ने आज्ञा दी कि सन्तान पैदा करो। आज्ञा माननी आवश्यक थी। लेकिर यदि संतान के लिये स्त्री के पास जाता तो कोई दुख न था। मैं तो स्वाद मैं फँस गया और मुझे अशान्ति आगई यद्यपि मैंने बीनें और शब्द भी सुने हुए थे। इसलिए अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूं। अपने विषय विकार को कम करो। केवल काम को भोगना ही विषय नहीं है। जीभ का स्वाद भी विषय है। सुन्दरता में अधिक ग्रस्त रहना भी विषय है। विषय कई प्रकार का होता है—

काम काम सब ही कहें, काम न चीने कोय।
जितनी मन की कामना काम कहावे सोय ॥

अशान्ति का पहला कारण स्वास्थ्य का बिगड़ना है। तुम लाख अभ्यास करो और चाहे किसी गुरू के पास चले जाओ यदि स्वास्थ्य का ध्यान नहीं तो शान्ति कहां। अशान्ति का दूसरा कारण आर्थिक कठिनाइयां हैं। इसके कारण बड़े बड़े सन्त अशान्त हो जाते हैं। ये महात्मा जी तो बाहर जाते है। क्यों ? धन के लिये। यदि कोई अपने पेट के लिये नहीं गया तो अपने डेरे या मन्दिर के लिये गया। मैं हैदराबाद जाया करता हूं या अमरीका जा रहा हूं क्या लोगों को तारने के लिये जाता हूं ? मन्दिर के लिये और अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए जाता हूं।

"प्रागन्दा रोजी प्रागन्दा दिल"

जिसकी जीविका का प्रबन्ध नहीं उसको शान्ति कहाँ ? इसलिये आदमी को अपनी जीविका कमानी चाहिये यदि कम मिलता है तो उसमें निर्वाह करो। लोकलाज में मत आओ। करजा उठाके शादी मत करो। मुझे लोगों के प्रति दिन दुख भरे पत्र आते हैं। अशान्ति के कारण तो ये हैं जो मैंने बताये हैं और लोग समझते हैं कि नाम जपने से धन आजायेगा। अशान्ति के जो कारण हैं शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य और आर्थिक कठिनाई इनको दूर करने का यत्न करो। तब अशान्ति दूर होगी। राजयोग पिछले युग में राजाओं के लिये था क्योंकि उनकी आवश्यकतायें पूरी होती थीं। ऋषियों ने देखा कि यह तो धनी लोग ही लेगये। इसलिये उन्होंने सन्यास आरम्भ कर दिया।

खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया ॥

मैं हूं समय का सन्त सतगुरु। जिस ज्ञान की इस समय आवश्यकता है वह बता रहा हूं। शान्ति के लिए क्या करना चाहिये ?

सन्तों के बताये हुए नियमों पर चलो। शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य की रक्षा करो। देखो! मानसिक ब्रह्मचर्य की गिरावट जितनी हानिकारक है उतनी शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट हानि-कारक नहीं हैं। १९४२ में मेरे पास एक प्रौफेसर आया और कहने लगा कि बावाजी! अशान्त रहता हूं। मैंने कहा कि तू व्यभिचारी है। उसने कहा कि आप बिलकुल गलत कह रहे हैं। २६ साल की आयु में मेरा विवाह हुआ और तब तक मैं पूरा ब्रह्मचारी रहा हूँ। मैंने कहा कि स्कूल और कौलेज में तुम्हारे विचार कैसे थे? वह कहने लगा कि मेरे पास नंगी स्त्रियों के ४०-५० फोटो थे और मैं रात को एक आध घण्टा उनको देखा करता था। मैंने कहा कि कितने साल तक? उत्तर दिया कि दस साल तक। मैंने कहा कि अब जब तक तुम कम से कम पांच साल तक किसी ऐसे आदमी के साथ प्रेम नहीं करोगे जिसमें काम नहीं है तुमको शान्ति नहीं मिलेगी। मैं तुमको क्रियात्मिक पाठ बता रहा हूं। ये जितने अधिक भक्त बने हुए हैं उनके जीवन के हालात देखो। तुम लोग आये हो मेरे सिर पर भी कोई जिम्मेदारी है लेकिन मैं किसी को फूँक नहीं मार सकता। गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। आजकल गुरुओं ने पाखण्ड का जाल बनाया हुआ है और संसार को अज्ञान में रख कर लूटा जारहा है। यदि तुम्हारा मानसिक ब्रह्मचर्य गिरा हुआ है और तुम किसी गुरु का ध्यान कर रहे हो लेकिन यदि तुम समझोगे कि इसकी इतनी स्त्रियां हैं और इतने बच्चे हैं तो तुम अपनी कमी को पूरा नहीं कर सकोगे और न तुम अपने कामांग को रोक सकोगे। इसलिये तुमको कोई लाभ नहीं पहुंचेगा मैंने एक बार सत्संग में कहा कि कृष्णजी का ध्यान करने वाला अपने कामांग को रोक नहीं सकता तो दो आदमी जो कृष्णजी के पुजारी थे वे उठकर खड़े होगये और कहने लगे कि आपने गलत कहा है। मैंने कहा कि अच्छा तुमही बताओ कि क्या तुम्हारा अपने कामांग पर वश है?

नहीं। क्यों ? क्योंकि शास्त्रों ने तो कृष्णजी के बालरूप की महिमा गाई है और तुम लोग यह समझते हो कि कृष्णजी की इतनी रानियां थी और इतने बच्चे थे। ऐसे ही जो आदमी बाबे फकीर के या हुजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के जीवन के हालात को देखेगा और उनकी महिमा भी गायेगा उसको शान्ति कहाँ ? एक बार जुगाधरी का एक सरदार मेरे पास आया और कहने लगा कि मैं हुजूर बाबा सावनसिंह जी का चेला हूं, लगभग पन्दरह साल होगये नाम लिये हुए मगर कुछ बना नहीं। मैंने कहा कि तुमको शुगर की बीमारी है, दिल की बीमारी है और हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज पर तुम्हारा विश्वास नहीं है। वह कहने लगा कि आपने बिलकुल ठीक कहा है। बाबाजी महाराज S. D. O थे और मैं उनके पास ठेकेदार था हम लोग उनको कमीशन दिया करते थे और वह उस रकम को डेरा व्यास में दे देते थे। जब वह व्यास डेरा में गुरू बन गये तो मैंने उनसे नाम लिया लेकिन दिल में सदा यह विचार रहता था कि वह तो हमसे रिश्वत लेते थे। इसलिये कहा गया है कि गुरु इष्ट है। उसको पूर्ण मानो। यदि यह समझोगे कि गुरु जन्मता है और मरता है तो तुम मंजल तक नहीं पहुँच सकते जो बावे फकीर को पण्डित मस्तराम का लड़का समझता है वह मंजिल पर नही पहुंच सकता। इसलिए कबीर साहिब ने कहा है—

गुरु को मानुष जानते सो नर कहिये अन्ध।
दुखी होंय ससार में, आगे यम का फन्द ।।
गुरू किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहि।
कहै कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहि ।।

हजारों लोग मेरा ध्यान करते हैं और मुझे गुरु मानते हैं। मैं अपनी जान बचाना चाहता हूं। यदि मैं सचाई नहीं बताता तो मैं दोषी हूं। मगर हरएक आदमी का ऐसा विश्वास भी नहीं जैसा कि

मेरा या हुजूर बाबा सावनसिंहजी का बैठा। रूप की बानी को समझो और उस पर अमल करो। आजकल गुरुओं के जन्म दिन मनाये जाते हैं और उनके जीवन के हालात वर्णन किये जाते हैं। गुरु तो आइडियल है। तुम लोग आये हो सचाई वर्णन कर रहा हूं। विषय विकार का जीवन मन की अशान्ति का कारण है।

खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया ।:

गुरु करता क्या है ? मर्म भेद और रहस्य बताता है और असलियत बताता है : मैं निर्भय होकर कहता हूं कि कोई भी मत सचाई नहीं बताता और अपने जाल में फँसा कर लूटता है कि नाम लेलो, हर महीने आओ और पैसे देते रहो। सच्ची बात कह रहा हूं अब तुम्हारी इच्छा है आओ या न आओ मानवता मन्दिर में यदि पैसा देना चाहते हो तो बड़ी खुशी से दो और यदि नहीं देना चाहते तो मत दो। मेरे जिम्मे ती हुजूर दाता दयालजी महाराज ने कर्तव्य लगाया हुआ है—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

गुरु का अंग है गुरू का शब्द। अशान्ती का तीसरा कारण किसी का अनुचित दवाव है अर्थात एक आदमी को गरीब समझ कर उस पर अनुचित दबाव डालना भी उस उस गरीब के लिये अशान्ति का कारण है। क्या गरीब और क्या अमीर अनुचित दबाव सब की अशान्ति का कारण है। हुजूर महाराज जी ने लिखा है कि जिस प्रकार डाक्टर से दवाई लेने के बाद यदि कोई आदमी डाक्टर का बताया हुआ अनुपान नहीं करता तो उसको दवाई का कोई लाभ नहीं होता ऐसे ही नाम के साथ भी अनुपान आवश्यक

है वरना लाभ नहीं होगा। इसलिये कहना चाहता हूं कि अपने ब्रह्मचर्य का ध्यान रखो और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। बच्चों का इतना दोष नहीं जितना मां-बाप का है, यह ससार बासना का बसा हुआ है—

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरुरदेवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मई गुरु देवाय नमः।

गुरु ब्रह्म हमारी बासना है। हम संतान के लिये तो स्त्री के पास नहीं जाते। हम तो अपने स्वाद के लिये जाते है तो हमारे ही संस्कार संतान में जावेंगे। इतिहास वीर अभिमन्यु का वर्णन करता है कि वह अपनी माता के गर्भ में था, रात को अर्जुन अपनी स्त्री को चक्रव्यूह के बारे में बता रहा था। वह सुनते सुनते सोगई लेकिन चक्रव्यूह के भेदने की बात के समय तक वह जाग रही थी। वही संस्कार अभिमन्यु पर पड़े। वह उसमें दाखिल होना तो जानता था मगर बाहर निकलने का उसको पता नहीं था। ऐसे ही यदि हमारी सन्तान खराब है तो दोष हमारा है और उसके जिम्मेदार हम हैं। हमको यह भेद नहीं मिला और न हीं किसी ने हमको यह बात समझाई है। तुमको अध्यात्मिकता के बारे में क्या बताऊँ तुम समझ नहीं सकोगे। मैं तुमको जीवन में सुखी रहने का मार्ग बता रहा हूं। कर्म की फिलास्फी बहुत गहरी है। जैसा सोचोगे बैसा ही बनोगे। तुम रात को स्वप्न में डरते भी हो और खुश भी होते हो। कल्पित स्त्री बना लेते हो उसके साथ विषय भोगते हो और तुम्हारा वीर्य भी गिर जाता है तो इससे क्या सिद्ध हुआ ? कि स्वप्न के विचार का प्रभाव तुम्हारे शरीर पर पड़ता है तो यह बताओ कि जो कुछ तुम जाग्रत में सोचते हो उसका प्रभाव तुम्हारे शरीर पर क्यों नहीं आयेगा। इसलिये तुम अपने अमल से तारोगे : कोई आदमी तुमको फूँक मार कर नहीं तार सकता। क्या कहूं मैं सुन सुना कर चकित होता हूं। कल एक आदमी मेरे पांस आया

और उसने बताया कि मैं एक गुरु महाराजजी के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि यदि नाम लेलूँ तो क्या आप मुझे सतलोक पहुंचादोगे ? हाँ। मैंने कहा कि मेरे लड़का नहीं है तो उन्होंने कहा कि लड़का भी होजायेगा लेकिन मेरे चेले बन जाओ। इसीलिये तो मैं कहता हूं कि आज कल का गुरुवाद ठगवाद है। जीव विचारे कहां जायें। कोई सचाई नहीं बताता श्रीमद् भागवत गीता में लिखा है कि जब धर्म की हानि होती है तो कृष्ण अवतार होता है। मैं आया ही इसीलिये हूं। इस समय का गुरुवाद पाखण्ड का जाल है। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। विज्ञान कहता है कि हमारे शरीर के हर एक भाग की गति ऊपर अपने सेन्टर तक जाती है और वहां से शक्तिशाली होकर फिर वापिस उसी स्थान पर आजाती है। जो कुछ भी हम करते हैं और सोचते हैं वह ऊपर जाता है। यदि हम शरीर छोड़ जायें तो जहाँ भी हम होंगे वह प्रभात हमारे ऊपर होगा। इसलिये मन, बचन और कर्म से शुद्ध रहो। किसी से हेरा-फेरी मत करो वरना यह कर्म का फल तुमको छोड़ेगा नहीं। हुजूर दाता दयालजी महाराज को पिछली आयु में राहू आगया। अच्छा हुआ कि वह स्वयं ही धाम को छोड़ कर चले गये और मान रह गया। क्या सन्तों के बच्चे नहीं मरे ? यदि मेरे प्रसाद से किसी के बच्चा होगया तो लोग समझते हैं कि बाबा बड़ा करनीवाला है लेकिन मेरी लड़की के विवाह को २०-२२ साल होगये, मैंने कई बार प्रसाद दिया लेकिन उसके कोई बच्चा नहीं तो कहाँ गई मेरी करनी दिखावें। बाबा कौन है किसी को कुछ देने वाला। यह सब तुम्हारे ही विश्वास का फल होता है। यह जो कुछ भी किसी को मिलता है It is either your faith or fate इसलिए अपनी नीयत अपने विचार और अपने कर्म को ठीक रखो। स्वामीजी महाराज ने लिखा है—

कर्म जो जो करेगा, अन्त में भोगना पड़ना

तो फिर तुम कैसे आशा कर सकते हो कि तुम कर्म के फल से बच जाओगे। बाबे से नाम ले लेने से क्या तुम कर्म से बच जाओगे ? नहीं।

खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया।
रैन दिबस बेचैन, तरसते जीवन बिताया॥
करता रहा पुकार, दाद को कहीं न पाया।
भीख भिखारी जगत गुरू सब भरमे माया॥

सब माया में हैं। माया है धन मान और प्रतिष्ठा। आज तक किसी महात्मा ने यह सचाई नहीं बताई। लेकिन मैंने इस सचाई को खोल दिया है। हुजूर दाता दयाल जी महाराज किताबों में तो सब कुछ लिख गये मगर जबानी नहीं कहा। क्यों ? परदा रखने से पैसा आता है। जबानी कह देने से लोग यह समझते हैं कि बाबे के पास कुछ नहीं है। लोगों को सब्ज बाग दिखाओ और अपना प्रौपे-गण्डा करोगे और जितनी इच्छा धन इकठ्ठा करलो।

साँचे कोई न पतीजिये, झूठे जग पतयाये॥
गली गली गोरस फिरे, और मदरा बैठ विकाय॥

अपनी नीयत से किसी का बुरा मत करो, किसी से घृणा और द्वेष न करो और अपनी नीयत को साफ रखो क्योंकि तुम्हारी नीयत का ही फल तुमको मिलेगा। इन बातों पर अमल करने से यदि तुम्हारे साथ कोई आदमी शत्रुता भी करेगा तो वह स्वयं दुख उठायेगा। सब सन्तों का विरोध हुआ और पत्थर पड़े लेकिन मेरा कोई शत्रु नहीं क्योंकि मेरे अन्तर में किसी के साथ शत्रुता की कोई भावना नहीं है, द्वेष नहीं है और न ही मैं किसी गद्दी के विरुद्ध हूं। मैं तो असली गुरुमत का मार्ग बता रहा हूं। सन्तों ने आवागवन से निकलने और अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिये "नाम" है शर्त यह कि तुम नाम लेने के बाद बुरा कर्म न करो और यदि नाम लेने के बाद कर्म अच्छा नहीं करोगे तो तुम बच नहीं

सकते । वह नाम तुमको खा जायेगा । भाग्य एक गढवी है उसको कुए में डुबो दो या नदी में डालो या समुद्र में, उसमें उतना ही पानी आयेगा जितनी कि उसकी Capacity है । अपना कर्तव्य पूरा करो लोक लाज आदमी को दुखी करता है ।

शब्द विना खाली फिरें सब धोखा खाया ।

देखो] यदि हम भारत में कोई दोष करके भाग कर दूसरे देश में चले जाते हैं तो भारत का कानून लागू नहीं होता । ऐसे ही हम शरीर और मन में रहते हुए कर्म करते हैं यदि हम मन को छोड़कर ऊपर चले जायें और अन्त समय पर यदि प्रकाश और शब्द आजायें तो हमारी सुरत प्रकाश और शब्द में चली जायेगी और यहाँ के अच्छे और बुरे कर्मों का कोई फल उसको भुगतना नहीं पड़ेगा । लोग कहते हैं कि अन्त समय बाबा फकीर आता है, हुजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज आते हैं या किसी देवता का रूप आता है । असलियत यह है कि कोई नहीं आता । जिस प्रकार का मस्तिष्क में संस्कार होता है वही आता है । क्योंकि तुम मन के मण्डल से बाहर नहीं गये इसलिये अन्त समय पर तुम्हारे सामने यदि कोई सरगुण स्वरूप आयेगा तो क्योंकि यह मन के मण्डल में है इसलिए वह आदमी मन के दायरे से बाहर नहीं जा सकता । इस वास्ते अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पैदा करो ताकि अन्तिम समय पर तुम प्रकाश और शब्द में चले जाओ । हुजूर महाराज ने प्रेम बाणी में साफ लिखा है कि सत्गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं । इसलिये जब तक प्रकाश और शब्द में नहीं जाओगे अच्छे और बुरे कर्म के फल से नहीं बचोगे ।

आप लोग आये हैं । आपको मर्म बता रहा हूं कोई दावा नहीं । मेरी खोज है । हो सकता है कि गलत हों । मेरे जिम्मे हुजूर दाता दयाल जी महाराज का ऋण था कि शिक्षा को बदल जाना । इसलिये में यह काम करता हूं और आपको सरल से सरल विधि

बता रहा हूं कि अपनी नीयत को साफ रखो। क्योंकि मन चंचल है इसलिये मन की चंचलता को दूर करने के लिये सुमिरन ध्यान और भजन है। मन के विचारों पर दृष्टि रखो। यदि मन गलत सोचता है तो सुमिरन ध्यान और साधन से बदलो। मैं अब तक भी गिर जाता हूं। मन वाणी है: यदि कोई ऐसी मशीन हो जो मन के विचारों को रिकार्ड कर सके तो ये महात्मा लोग संसार को मुँह न दिखा सकें। मनको वश करना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर तो तुम लोगों ने दया कर दी। जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है तो मुझे समझ आगई कि मेरे अन्तर भी जो रंग रूप भाव विचार और शकलें पैदा होते हैं। ये सब संस्कार हैं और माया है। इसलिये मैं इनसे निकल गया। अब मैं अमरीका जा रहा हूं। क्यों? उन लोगों के अन्तर मेरा अनुभव और मेरी खोज ठीक है कि कोई सन्त महात्मा या गुरु राम या कृष्ण किसी के अन्तर नहीं जाता तो ये जितने महात्माओं ने अपनी मान प्रतिष्ठा और धन धान्य के लिये परदा रखा और सचाई नहीं बताई तो तुम लोग तो कहोगे कि ये सतलोक गये, मैं कहूंगा कि उनके लिये सीधा नर्क है। कबीर साहिब का एक शब्द है।

साधो यह मन है बड़ जालिम
जा को मन से काम करो है, तिसही है है मालूम ॥

मन के कारण हम कभी हाय हाय करते हैं और कभी खुश होते हैं। जो इस मन के चक्कर में आगया वह दुखी होता है।

मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके।
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके ॥

मन की छाया क्या है? मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है। मैं तो होता नहीं तो जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है वह तुम्हारे मन की छाया है। मेरे रूप ने तुमको कोई बात कह दी तो

तुम समझते हो कि बाबा बड़ी करनी वाला है और तुमने बाबे को खूब भेंट दी। मगर वह रुप छाया है बाबा तो नहीं है। मानवता मन्दिर की जड़ों में कुल्हाड़ी मार रहा हूं। मैं किसी को लूटना नहीं चाहता। मैं अनामी धाम से फकीर के चोले में सचाई बताने के लिये आया हूं। देवी देवता राम कृष्ण, बाबा फकीर या और गुरु कोई भी बाहर से नहीं आता। यह सब मन की छाया है। चौदह लोक में मन का राज्य है। तुम कहोगे कि जायें कहाँ ? तुम्हारा साथी भ तुम्हारा मन ही है। इसको पूर्ण ब्रह्म समझो। तुम्हारे ही विश्वास से मन भी बस में आजायेगा और तुम चक्कर से भी निकल जाओगे। मैंने सचाई वर्णन करदी अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है।

मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्व गुन कीन्हे।
तीन लोक जीवन वस कीन्हे, परै न काहू चीन्हे॥

मेरा जीवन बहुत परिश्रम में बीता है। स्वामी जी महाराज ने लिखा है कि ये जितने भी अवतार हुए हैं इनमें से कोई भी लक्षपद को प्राप्त न कर सका। मैं सोचा करता था कि मैं सन्तमत में आकर कहां फंस गया। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊँगा। मैंने हुजूर दाता दयाल की सेवा की। उन्होंने फरमाया था कि तुमको सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा और उन्होंने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी। इसलिये मैं यह काम करता हूं। यह जो कुछ मैं बता रहा हूं यह नई शिक्षा नहीं है। शिक्षा तो वही है मगर जीव इसके अधिकारी नहीं हैं। संसार वालों को तो सांसारिक वस्तुयें चाहिये इसके लिये भी तुमको बता दिया कि सब कुछ तुम्हारे ही मन पर निर्भर है। जिनका विश्वास है उनके काम हो जाते हैं।

जो कोउ कहै हम मन को मारा, जाके रूप न रेखा ।
छिन छिन में कितनों रँग लाते जे सपनेहुं नहिं देखा ।

तुम लोग सोचो कि तुम सत्संग में आये हो और मैं सत्संग कराता हूं । क्या मिलता है ? समझ ज्ञान सच्चा भेद और असलियत बता रहा हूं ।

रसातल इक्कीस ब्रह्मांड, सब पर अदल चलावें ।
षट रस में भोनी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥

यह भेद मुझे समझ में नहीं आता था । मैंने यह तुम लोगों की दया से समझा । इसलिये आप लोगों को मैं सच्चा सतगुरु मानकर नमस्कार करता हूं । केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मुझे भेद का पता लगा । मेरे सामने बाबा चरण-सिंह जी ने, सन्त कृपालसिंहजी ने, भाई नन्दूसिंह जी ने माना कि हम किसी के अन्तर नहीं जाते लेकिन इनमें यह शक्ति नहीं कि ये पब्लिक में स्पष्ट वर्णन करें क्योंकि स्पष्ट वर्णन करने से धन नहीं आता । ये बड़े बड़े डेरे वालों को मैं बुलाता हूं तो ये आते नहीं । अच्छा यदि तुम नहीं जाते तो मुझे बुलाओ । मैं आजाऊँगा और यदि मैं गलती पर हूं तो मेरा सुधार करो । मगर ये मुझे बुलाते भी तो नहीं । मैं सन्तमत की सचाई और असलियत वर्णन करने के लिए आया हूं । जब किसी बात की हद हो जाती है तो उसका Anti पैदा हो जाता है जैसे भ्रष्टाचार की हद हुई तो इमरजैन्सी लग गई ।

सब के ऊपर नाम निहच्छर, तहँ लै मन को राखै ।
तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मुख भाखै ।

मन से परे की अवस्था में जाओ, जब तक मन से परे का इष्ट नहीं बनाओगे तुम आगे नहीं जा सकते । हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम इस भेद को समझने के लिये दिया था । सब अपने ही विचार का परिणाम है । मैंने किसी को नाम नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दिया । यह दयालदास अपने ही विचार से मुझे गुरू मानता है । प्रकाश और शब्द का अभ्यासी है । अब लोगों की सुरतें चढ़ाता है । लेकिन मैं गुरू बनने के लिये नहीं बल्कि गुरुमत को समझने के लिए हुज़ूर दातादयालजी महाराज के दरबार में गया था । मैं इस बात को जानना चाहता था कि स्वामीजी महाराज के पास क्या अधिकार था कि उन्होंने सब का खण्डन कर दिया । अब समझ आगई कि अधिकार यही था कि सब मन का झगड़ा है । लोग मेरा ध्यान करते हैं और मुझे पूजते हैं । क्या मुझे पूजते हैं ? अपने ही मन को पूजते हैं । मैं जब ऊपर चला जाता हूं तो मन का सारा नकशा मुझे दिखाई देता है । मैं तुमको भ्रम में नहीं डालना चाहता जिस अवस्था में तुम हो वहीं से ऊपर उठाना चाहता हूं ।

शब्द बिना खाली फिरे, सब धोका खाया :
अब मिलगये पूरे सतगुरु, उन भेद सुनाया ।।

सतगुरु क्या करता है ? भेद देता है इसके सिवाय और कुछ नहीं करता । तुम्हारे ही विश्वास का फल है मैं बाहर जाता हूं । लोग मिलते हैं । मैं उनसे कहता हूं कि मैं कुछ नहीं करता । तो वे लोग कहते हैं कि आप नहीं करते आपका यह फोटो करता है । सब तुम्हारा ही विश्वास है । क्यों लुटे जा रहे हो ।

सूरत सार लखवाय के फिर गगन चढ़ाया ।
गगन मण्डल में पहुंच कर, अनहद बजवाया ।।

असली वस्तु शब्द है ।

शब्द गुरू को कीजिये, बहुते गुरू लबार ।
अपने अपने स्वाद को ठौर ठौर बटमार ।।

जो कुछ मैं बताता हूं कोई ऐसी बात नहीं बताता । सब चक्कर में हैं । यदि कोई बताये भी तो इस सचाई को सुनने के लिये आता भी कौन है । संसार तो सांसारिक वस्तुओं के लिए सन्तों के पास जाता है । लेकिन क्या सन्त बीमार नहीं हुये ? क्या सन्तों के बच्चे

नहीं मरे ? कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। हाय हाय करने से कुछ नहीं बनता। हुजूर दाता दयालजी महाराज चोला छोड़ गये तो मैं बिलकुल नहीं रोया और नहीं मुझे कोई शोक हुआ यद्यपि मैं उनसे बहुत अधिक प्रेम करता था। क्यों ?

धन्य सन्त और सतगुरु, जिन सार बुझाया।
मन मत जग में फैलाया; गुरुमत नहीं आया ॥

सन्त सतगुरु की बड़ाई यही है कि वह भेद बताता है—

गुलाबकौर ! तू आई है। तेरा पति अन्धा है अब तू बता मैं तेरे लिए क्या करूँ ? मेरे वश में क्या है ? हाँ ! शुभ भावना देता हूं। यदि मेरी शुभ भावना से किसी को लाभ पहुंच जाये तो मेरी क्या हानि है। यह विचार की शक्ति है। किसी दुखिये की सहायता करो। उसकी शुभ भावना का बहुत लाभ है। ये ! कटनी वाले मामूली दुकानदार थे। अब दो सौ रुपये हर महीने मेरे लिये और पचास रुपये मन्दिर के लिये भेजते हैं। मैंने इस शर्त पर इनकी रकम मंजूर की थी कि तुम मुझसे न स्वार्थ और न परमार्थ मांगेंगे। एक बार इनमें से एक आदमी की टांग टूट गई। मुझे पता नहीं था। मैं वहां गया और कहा कि टांग के बारे में मुझे पता क्यों नहीं दिया तो वह कहने लगा कि यदि मैं आपको लिखता तो क्या आप मेरी टांग जोड़ देते ? उसका यह उत्तर सुन कर मैं बहुत खुश हुआ। यदि इन लोगों का दो सौ रुपया हर महीने न आये तो मेरा निर्वाह नहीं होता। इसलिये यदि मैं न भी चाहूं तो भी मेरे अन्तर से इनके लिये शुभ भावना निकलती है। इसके अतिरिक्त ये लोग एक पैसा प्रति रुपया अपने लाभ में से मुझे हर साल भेजते हैं और मैं वह रुपया धाम पर दे देता हूं। ये लोग मेरे बताये हुए नियमों पर चलते हैं। सब से पहले उनकी सेवा करो जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया है, बूढे माँ बाप, विधवा बहन और अपने बाल बच्चों की सेवा करो। यदि मां बाप से तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं उनको

तो सूखी रोटी देते हो और बावे फकीर को साग सब्जियां बनाकर खिलाते हो तो इसका कोई लाभ नहीं।

संसार में सुखी रहने के लिए अपना संकल्प ठीक रखो क्योंकि यह संसार ही संकल्प का है। जैसी आशा वैसी बासा, जैसी मति बैसी गति और जैसा ख्याल वैसा हाल। जो कुछ हमने किया है उसके फल से कोई बच नहीं सकता। अब प्रश्न यह है कि क्या हम किसी प्रकार से इस कर्म के फल से बच सकते हैं? मैं किताबी बात नहीं कहता। थ्यौरी तो है मगर प्रमाण कोई नहीं। चाहता हूं कि मरने के बाद संसार को बता सकूँ कि मैं कहां गया?

अन्त समय फिल्म चलती है। हमारे बिचार और संस्कार शकलें बनाकर हमारे सामने आते हैं। जब तक आदमी को यह विश्वास नहीं कि ये शकलें असल में हैं नहीं, यह सब माया है, वह इनमें ही फँसा रहेगा। मैं भी पहले फँस जाया करता था मगर अब नहीं। लेकिन स्वप्न में मुझे अब तक भी रेल तार मां बाप स्त्री और कभी लड़का आजाते हैं। कई बार तो मुझे याद रहता है कि मैं स्वप्न देख रहा हूं और कई बार भूल जाता हूं। मैं सोचा करता हूं कि यदि अन्त समय मुझे बेहोशी आगई तो पता नहीं मेरा क्या परिणाम हो। इसलिये "नथ खसम दे हथ"।

जिन पर दया आद करता की सो यह नहमत पाये।

आप लोगों की दया से मुझे यह विश्वास होगया कि अन्तर में जो कुछ प्रकट होता है, वह माया है। तो फिर क्या करना है? जिस रूप को मानते हो उसको पूर्ण परम तत्व आधार और शब्द स्वरूप मानो। फिर हो सकता है कि तुम्हारे ही विचार के अनुसार तुम पार होजाओ मगर गारन्टी नहीं, या यदि तुमने गुरु को पूर्ण माना हुआ है और उसके साथ प्रेम किया हुआ है तो हो सकता है कि जहां गुरु जायेंगा वहां तुम भी चले जाओ। लेकिन मैं किसी को यह बात बताता नहीं। क्यो? क्योंकि हो सकता है कि मैं नर्क में

जाऊँ तो फिर तुम क्यों मेरे साथ दुख उठाओ। इसलिए प्रकाश और शब्द को पकड़ो ताकि अन्त समय पर तुम इस चक्कर से निकल जाओ।

आप लोग आये हो। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस कामना को लेकर तुम आये हो मालिक तुम्हारी वह कामना पूरी करें।

———

सत (अद्वैत) पद की महिमा की कथा

मारवाड़ के राज्य में एक जगह जहां बीकानेर और जोधपुर की सीमा मिलती है बरगद का एक बड़ा बृक्ष खड़ा है। वृक्ष ने बहुत लम्बा चौड़ा मैदान घेर रक्खा है। और गर्मी के दिनों में जब धूप का मारा हुआ पथिक उसके नीचे आता है एक प्रकार से उसके साये में वैकुन्ठ के सुख का आनन्द लेता है। रेगिस्तान की दुर्गम कठिनाई का हाल कुछ न पूछो ? मध्यान: जब सूर्य भगवान सिर पर आजाते हैं। इस जोर की तपन से पाला पड़ता है कि जो कहे नहीं बनता ? ऊपर सूर्य नीचे गरम रेत यह प्रतीत होता है मानों किसी ने झुकते हुए भाड़ में झोंक दिया है। वायु के झोंकों से गर्म रेत उड़-उड़ कर शरीर में लगती हैं। आंख नाक कान सब उसमें भुड़भुड़े हो जाते हैं। राह चलना भी कठिन है। कोसों तक गावों का पता नहीं। न कहीं वृक्षों का साया न कहीं नदी नालों का किनारा। सूर्य का तेज तो फिर भी सहन कर लिया जाता है पर रेत की तपन से ईश्वर बचावे। जिस प्रकार एक अत्याचारी राजा का दंड तो सह लिया जाता है पर उसके अफसरों का दारुण शासन नहीं सहन होता। बिलकुल यह ही दशा सूर्य की धूप और रेत की

तपन की होती है। आँखें बन्द हैं, चित्त व्याकुल है, जी दुखी है। न कुछ कहा जाता है न सुना जाता है। इस दुख का अनुभव केवल वे ही लोग पर पाते हैं जिनको कभी मारवाड़ के भयानक रेगिस्तान में जाने का अवकाश मिल जाता है। ऐसे दुखी दीन पथिकों के लिये वह बरगद का वृक्ष वैकुण्ठ के कल्प वृक्ष से कम मूल्य का प्रतीत नहीं होता।

हमारा समाज भी धूप के तेज को झेलते हुए वहां पहुँचा उसके साये के नीचे पहुंचते ही नेत्र खुल गये। मृत्यु जो निकट दीखती थी उससे बच गये। जीवन को ढाढस बँधा ईश्वर को हजार हजार धन्यवाद दिया। और सब लोग उसके जीवन की शुभ कामना करने लगे जिसने ऐसे सुनसान विकट जगल में इस वृक्ष को लगाकर प्राणी मात्र पर अहसान किया था। सब लोगों ने वृक्ष के नीचे पहुँचते ही मौके से अपनी अपनी दड़ियां बिछालीं। मैंने भी ऐसा ही किया। वह सब तो सोगये। जानबूझ कर जागता रहा। नेत्र कुछ बन्द कुछ खुले। अध सोते हुए की दशा थी। पर मैंने लेट जाना या सो जाना उचित न जाना। उठ कर टहलने लगा। जब वृक्ष की दूसरी ओर से वहां एक चबूतरा बना हुआ था। मुद्दत से उसको किसी ने साफ नहीं किया था। फिर भी वृक्ष के नीचे बने होने के कारण उसको कोई हानि नहीं पहूँची थी। इस चबूतरे को देखकर मेरे चित में तरह-तरह के विचार उत्पन्न होने लगे। मैं सोचने लगा। सम्भव है यह चबूतरा किसी देवता का स्थान हो। और लोग यहाँ आकर पूजा करते हों। पर ज्यादा विचार करने पर यह ख्याल गलत साबित हुआ। क्योंकि वहां पूजा करने का कोई निशान मौजूद नहीं था। मैंने दिल में कहा क्या अच्छा होगा अगर इस चबूतरे के जबान होती तो आज वह अपना हाल सुनाता। अभी यह ख्याल मन में पैदा ही हुआ था कि सचमुच चबूतरे को जबान मिल गई। मुझको उससे प्रेम पैदा हुआ। प्रेम असली जीवन होता है। प्रेम की शक्ति

करामात दिखाती है। लड़कियां अपनी गुड़ियों से बातचीत करती हैं। मैं अपनी छोटी लड़की को कभी कभी जब कोई पास नहीं होता दोपहर के समय गुड़ियों से बात चीत करते देखता हूं। ऐसा प्रतीत होता है मानों दो प्यार करने वाले आत्मा सचाई से मिलते हुए बातें कर रहे हैं। मेरी भी इस समय यह ही दशा थी। मैं आश्चर्य में और व्याकुल होकर इसको देखने लगा। एक घड़ी दो घड़ी, तीन घड़ी तक इसको देखा किया। मुझको प्रतीत हुआ मानो चबूतरा जीवित हो मौजूद है। मैंने कहा यदि तुझको जबान मिली होती तो आज तुझसे मुझको कितने ही हालात सुनने में आते। इस जगह पर कितने मामले हुए होंगे। यहा कितनी ऐतिहासिक घटना घटी होंगी। तू बोलता क्यों नहीं कुछ तो अपनी राम कहानी सुनादे। ताकि अकेलेपन का समय कटे। और मुझको मनोरंजन की सामग्री हाथ आवे।

चबूतरे ने कहा। मैं बोल सकता हूं। चाहे में बाहरी जुबान से बातचीत नहीं कर सकता। पर मेरी वाणी वैसे ही रहस्यमई है जैसी तुम्हारी। पर मैं बोलूं तो किससे बोलूँ। लोगों के कान नहीं हैं। वह मेरी राम कहानी सुनने को तैयार नहीं हैं।

मैंने उत्तर दिया अभी थोड़े दिन की बात है मैंने काल की आवाज सुनी है। मेरी आंखों के सामने संसार के अगमापाई (नाशवान) होने का चित्र बहुत दिन से फिर रहा है। मेरे संसारी प्रेम के चित्र को कालचक्र ने मिटा दिया। मैं जिसको प्यार करता था काल भगवान ने दम के दम में मुझको उससे अलग कर दिया! तू समझ सकता है कि इस समय मैं बड़े ध्यान से तेरी बात सुनूँगा यदि अब तक कोई तुझ को नहीं मिला है तो कोई हर्ज नहीं। मेरी परीक्षा कर मैं इसी कारण मारा मारा फिर रहा हूं कि कही मेरे मन बहलाव की सामग्री हाथ आवे। मैं तेरी राम कहानी सुनने को तैयार हूं।

चबूतरा बोला मैं तुझसे जरूर बातचीत करूँगा। ऋषि दत्तात्रे से वृक्ष, नदी, नाले कंकड पत्थर सब बातें किया करते थे। आज मैं तुझको अपना कुछ हाल सुनाऊँगा।

मैंने कहा, चबूतरे ! तुझसे प्रेम की सुवास आती है तेरे साथ मुझको प्रेम है। मालूम नहीं मैं क्यों तेरी ओर खिचा जाता हूं जैसे लोहा चुम्बक की ओर खिचता है वैसे ही मेरी भी दशा है। मैं हजार कानों से तेरी बात सुनूंगा। तू देर न कर। अपनी कथा मुझको सुना दे। ऐसा न हो मेरे साथी जाग उठें और फिर हमको बातचीत का अवसर हाथ न आये।

अब चबूतरे ने जुबान खोली। बहुत दिन हुए यहाँ से दस कोस के फासले पर एक गाँव बसा हुआ था। वहां का रईस एक राजपूत था। उसके पुत्र की शादी किसी दूसरे रईस राजपूत की लड़की से ठहरी। लड़के की आयु १५ वर्ष से अधिक न रही होगी, लड़की केवल तेरह साल की थी। उसकी बरात इसी जगह से होकर गुजरी पहले यहां न कोई वृक्ष था न कुआ था। इसलिये कोई मुसाफिर यहां नहीं ठहरता था। बरात गई और कई दिन के बाद शादी करके इसी जगह होकर गुजरी। जिस समय बरात घर को लौट रही थी इत्तफाक की बात उसी समय राजा का लश्कर इधर से जारहा था। बरातियों ने उसको देख लिया और शाहना वस्त्र पहने हुए राजपूत दूल्हे ने पालकी रुकवाली। लश्कर के एक सिपाही से पूछा तुम क्यों और कहां जारहे हो, उसने कहा राजा ने दुश्मन पर चढ़ाई की है। यहां से दस कोस पर मोरचा लगा है। हम लोग लड़ने को जारहे हैं। ऐसा अवसर रोज रोज नहीं आता। बहुत सी सैना तो चली गई लड़ाई होरही होगी। हम भी जारहे हैं। अपनी बारी पर राजपूती करतब दिखावेंगे और अपना जीवन सुफल करेंगे। जैसे ही इस छोटी आयु के युवक दूल्हे ने यह बात सुनी उसका जी उमंग से भर गया। नेत्र अंगारे के समान लाल होगये। उसकी दशा जोश

के कारण ऐसी होगई कि बयान से बाहर है। उसने अपने चाचा और पिता से मारवाड़ी बोली में कहा। जिस दिन के लिये राजपूतनियां बच्चे जनती हैं वह दिन आज है। राजा संग्राम में गया है। तुम मुझको आज्ञा दे दो मैं भी रणभूमि में जाऊँ। पिता और चाचा सच्चे राजपूत थे, बोले बेटा तू धन्य है! तुमको रोकता कौन है। तू इस बरात का राजा है। जहां तू चलेगा हम भी वहीं चलेंगे और मौत और जिन्दगी में तेरा साथ देंगे। राजपूत की असली शादी केवल रणक्षेत्र में होती है। जहां तलवारों के बाजे बजते हैं। खून की पिचकारियां चलती हैं। और फूलों के समान सिरों की वर्षा होती है। वह क्षत्री क्षत्री कब है जिसका दिल लड़ाई का नाम सुन कर बल्लियों न उछलने लगे। चल हम दोनों भी तेरे साथ हैं और इस प्रकार राजा के नमक से, बरी होंगे। यदि जीवित रहे तो यश के भागी होंगे और अगर मर गये तो सीधे स्वर्ग में जाकर अप्सरायें व्याहेंगे। पिता और चाचा की बातें सुन कर सब बरातीं भी कहने लगे हम भी लड़ने चलेंगे। हमको फिर कभी ऐसा अवसर हाथ न आयेगा।

इस प्रकार सब लड़ने को तैयार होगये। पिता का आयुष पाकर दूल्हा अपनी दुलहिन के पास गया। भोली भाली जुबान में सब कथा कह सुनाई। लड़की तेरह साल से अधिक न थी मुश्कराती रही इसकी बात सुन कर बोली राजपूत! तेरे माता पिता धन्य हैं। मुझको आज्ञा दो तो मैं भी समर में तेरे साथ चलूँ। उसने कहा नहीं तू यहां ही रह। वह मान गई और अपने हाथ से पति को पान देकर कहने लगी। जाओ मुझको स्त्रियों में भाग्यवान साबित करो। लोग कहें इसका पति लड़ाका वीर है और मुझको राजपूतनियों में यश मिले। यदि तुम संग्राम में जीत कर आये तो क्या कहना है! वर्ना इस जगह से मैं भी अग्नि के विमान पर तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी। मेरा ध्यान जी में न लाना। धर्म का विचार दिल में

रखना ।

सूर चला संग्राम को कबहु न देवे पीठ ।
आगे चल पाछे फिरे ताका मुख नहीं दीठ ।।

दूल्हा चलने को हुआ छोटी आयु की दुलहिन ने उसका पांव चूमा और फिर पालकी से निकल कर उसने उनको पान के बीड़े लगाये । और अपने सुसर सम्बन्धी, देवर, जेठ, चाचा ताऊ सबको देकर कहा प्राण नाथ ! संग्राम को जाते हैं आप लोग भी उनका साथ दीजिये ।

छोटी आयु की लड़की और उसका क्षत्रीपन ! सब देख कर दंग रह गये । कायर से कायर का भी ऐसे अवसर पर साहस बढ़ जाता है । सब रणक्षेत्र को तैयार होगये । इस प्रकार राजा को नई सैना मिल गई जिसका सिपेसालार यह युवक छोटी उम्र का दूल्हा राजपूत था । जिस समय यह नई पलटन राजा की निगाह के सामने से गुजरी और उसने उनका हाल सुना उसकी तबियत खुश होगई । राजपूत ने राजा को नमस्कार किया । राजा ने शाबाशी दी । और सबसे प्रथम उसी की सेना को रणक्षेत्र में जाने का सौभाग्य प्रदान किया । दूल्हा के शरीर पर वही बाना था जो उसने शादी के समय पहना था । हाथ के कंगन भी नहीं खोले गये थे । वह लड़ने के लिये ऐसे झुके जैसे सिह कछार में अभय होकर बिफरते हैं । एक एक ने दस दस और बीस बीस को मारा और इस प्रकार लड़ कर अपनी जानें दीं । नौजवान ने तेरह आदमी मारे । अन्त में उसके गहरी चोट आई । लोग उसको डेरे में उठा लाये । वह बोला मुझको रण-भूमि से अलग मत होने दो । जब तक मेरी जान में ज़ान है बराबर लड़ता रहूँगा । मेरी पगड़ी लेजा कर मेरी स्त्री को दे देना । केवल यह ही एक उपहार है जो मैं उनकी भेंट करता हूं । मरहमपट्टी की गई । युवक हठीला था । फिर लड़ने को पहुंच गया । इस दफे भी दो चार आदमी उसके हाथ से मारे गये । अन्त में वह भी मारा गया ।

इसके अपार साहस को देख कर राजा की सैना में भी एक अद्भुत जोश पैदा होगया। उसके घोड़े से गिरते ही शत्रुओं ने लाश के टुकड़े २ कर दिये। लड़ाई जोर की हुई। अन्त में विजय राजा की हुई। बरात के आदमी करीब करीब सब ही मारे गये।

जब लड़ाई होती रही दुलहिन सब्र सन्तोष के साथ इसी जगह बैठी रही जहां तुम मुझको देखते हो। सूर्य की धूप कड़ाके की थी। पर उसने परवाह न की। अन्त में सैना जीत कर लौटी। राजा के सैनिकों ने मृतक की पगड़ी उसको दी। यह तेरे शूरवीर पति की निशानी है। वह स्वर्ग को गया। लड़की ने प्रेम और प्यार से पगड़ी लेली। चेहरे पर उदासी का नाम नहीं! बराबर मुस्कराती रही। राजा ने और अन्य पुरुषों ने उसको धैर्य बँधाया। पर उस पर सत सवार होगया था! दृष्टि मैं क्षणभंगुर जीवन का चित्र खिच रहा था। उसने मुस्कराते हुए कहा—

साध सती और सूरमा, इनका पता अगाध।
आसा छोड़े देह की तिन में अधिका साध।,
सिर राखै सिर जात है सिर काटै सर होय।
जैसे बाती दीप की कटि उज्यारी होय॥
धड़ से शीश उतार दे, डार देह ज्यों ढेल।
काहु सूर को सोहसि धर जाने का यों खेल॥

सन्नाटा छागया चारों ओर राजा की सेना ने घेरा डाल लिया।

जहां वह बैठी थी वहां ही चिता तैयार की गई। उसने कई दिन से कुछ खाया पीया नहीं था। पर चहरे पर जलाल बरस रहा था सत का तेज कुछ इस तरह प्रकाशमान था कि राजा और उसके अफसर देख कर चकित थे। वह अपने पति की पगड़ी गोद में लेकर चिता पर बैठ गई, चिता स्वतः हीं भभक उठी रीति रस्म के अनुसार उसने लोगों को सुपारी बाँटी फिर शरीर का कुछ भाग जल गया। उसका सिर लटक गया। और इसी प्रकार वह क्षत्रानी

जिसकी आहुति रणक्षेत्र से कहीं अधिक प्रभावशाली, अति पूनीत और अधिक शिक्षाप्रद थी अग्नि के विमान पर चढ़ी हुई सीधी स्वर्ग धाम को चली गई, देवताओं ने जय जय कार की शब्द ध्वनि से आकाश को गुंजा दिया। जिसने यह दृश्य देखा जीते जी वह इसको न भुला सका।

इस कदर किस्सा सुनाकर चबूतरे की बाणी बन्द होगई। जैसे अधिक प्रेम अंग उमड़ने पर मनुष्य की वाणी गिड़गिड़ाने लगती है। साफ साफ बात नहीं कह सकता यह दशा गद्गद् होने पर स्वभाविक होजाती है। मेरे चित्त पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा थोडी देर के बाद उसने फिर जुबान खोली। दुल्हन जल गई। जब इसकी चिता ठंडी हुई राख के दो भाग किये गये। एक तो राजा के हुक्म से गंगाजी को भेजा गया। और दूसरा इसी जगह गढ़ा है जिस पर यह चबूतरा खड़ा है। पहले कुछ दिन तक राजपूत घराने के पुरुष यहां आकर पूजा किया करते थे और इस सती देवी से आशीर्वाद मांगा करते थे। पूजा में चावल होते थे जिसको चुगने के लिये पक्षी आजाया करते थे। उनमें से किसी ने बरगद के बीज बीठ कर दिये उससे यह वृक्ष स्वतः ही पैदा होगया जिसकी आज तुम छाया मेरे ऊपर देख रहे हो। मैं इस वृक्ष से पुराना हूं।

मैंने पूछा क्या तू मुझको उस सती के पति और उस समय के राजा का नाम बता सकता है।

वृक्ष ने कहा नाम और रूप की हविस छोड़ दे। नाम और रूप दोनों मिथ्या हैं। मैं इधर ध्यान नहीं देता। तुझको भी उचित है आज से इस ओर से अपने चित्त को हटाले। सती के इस सत से शिक्षा ले। एक का होरह दूसरे की आस छोड़ इसी में सब कुछ है। दुई में दुख है। एक में दुख नहीं है। और मस्त होकर यह दोहे गाने लगा।

पतिव्रता को सुख घना जाके पति है एक।
मन मैली विभिचारिणी जाके खसम अनेक॥
पतिव्रता मैली भली काली कुमल कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर बारूँ रूप सरूप॥
नैनों अन्दर आव तू नैन झांप तोहि लूँ।
ना मैं देखूँ और को ना तोय देखन दूँ॥
नाम न रटा तो क्या हुआ जो जन्तर है हेत।
पतिव्रता पति को भजै कबहुँ नाम न लेत॥
एक नाम को जान कर दूजा दिया बहाय।
जप तप तीरथ व्रत नहीं सत गुरु चरण समाय।

मुझ पर जो हालत गुजरी वह बयान से बाहर है। मैं खुशी में बेसुध होकर इस प्रकार चबूतरे के राग को सुनने लगा कि तनबदन की सुध न रही। आखिर राह का थका हुआ था। एक ओर ठँडी हवा चल रही थी। दूसरी ओर मन को मुग्ध करने वाले राग की धुन छिड़ी थी, चित स्थिर होगया। नींद आगई। मैं सोगया। थोड़ी देर बाद आंख खुली। मेरे साथी अपनी दड़ियां लपेट रहे थे। मैंने भी दड़ी उठाली और उनके साथ दूसरी ओर को चल दिया। चलते समय मैंने चबूतरे को नमस्कार किया। जिसने सती के सच्चे इतिहास में मुझको सत की, अद्वैत की; सार तत्व की शिक्षा दी।

मैं अबला पीउ पीउ करूँ, निर्गुण मेरा पीउ।
सुन्न सनेही गुरु बिन और न देखूं जीउ॥

———

आत्म ज्ञान के प्राप्त करने का गुरु

(१) एक मनुष्य किसी यन्त्र या कल को अपनी बुद्धि से बनाता है और सब उससे लाभ उठाते हैं। सभी कल के बनाने वाले तो नहीं होते।

(२) एक आदमी कुआँ खोदता है और सब पानी पीते हैं। सब के सब तो कुआं खोदने वाले नहीं होते।

(३) घर का मालिक कमाता है बाल बच्चे स्त्री-पुरुष सब के सब तो कमाई नहीं करते।

(४) एक आदमी किताबें लिख कर सबको समझाता है और सब विद्वान हो जाते हैं। सब ग्रन्थकार नहीं हुआ करते।

(५) इसी तरह जिसने सत् की कमाई करली है उसके संग में आकर बैठो उठो। तुम भी उसकी कमाई के भागी हो जाओगे। कहना केवल इतना ही है परन्तु परदा देकर बात कही गई है जिसमें बाहिर मुखी लोग भ्रम में न पड़ें। समझने वाले सैन बैन (इशारे) में समझ जाते हैं परन्तु जिनमें अधिकार नहीं है वह हजारों किताबें पढ़ कर भी मूर्ख ही बने रहते हैं।

१. पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ॥१॥

२. पंडित केरी पोथियाँ, ज्यों तीतर का ज्ञान।
और न सगुन बतावही, अपना फन्द न जान ॥२॥

३. पढ़ा गुना सीखा बहुत, मिटा न संशय सूल।
कहें कबीर का सों कहूं, यह सब दुख का मूल ॥३॥

———

सत्संग

(१) यदि सार तत्व (असलियत) का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो सत् संग में आओ। न किताबों से यह गुत्थियाँ सुलझेंगी और न बाहिरी विद्या के विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ और बाद विवाद करने से।

(२) सत्संग की परिभाषा सब ने कही है। हम उन सब से कहीं अधिक कह सकते हैं परन्तु स्पष्ट शब्दों में कह दें तो अभी झगड़ा मच जाये और लेने के देने पड़ें। क्या करें! बिना कहे हुये भी नहीं रहा जाता।

(३) सतसग नाम है सत् के संग का। आओ और सत् का सग करो। इस सत् के संग से तुमको आप ही आप अपने सत् स्वरूप का ज्ञान यों ही बिना किसी परिश्रम और वाद बिवाद के हो जायेगा।

दीपावली एवं नये कार्यालय
के
उद्घाटन उपलक्ष में हार्दिक कामनाओं सहित
बी. आर. मेटल कोरपोरेशन
तांबा, पीतल, जस्त, तथा सभी अन्य धातुओं के थोक विक्रेता
गली नं० ११ सदर बाजार दिल्ली ११०००६
दूर भाष:
कार्यालय—५११६३४ पी. पी.
घर—२२६३५६

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

हारामायण	१०)
ावद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
ोग ३ भाग	४)
मी योग ६ भाग	८)
ोग प्रथम भाग	२)५०
द्वितीय भाग	२)७५
तृतीय भाग	१)७५
ाध्य ज्ञान प्रकाश	३)
ान योग	)७५
ा योग	१)
स्य	१)
योग प्रकाश	२)५०
on Anand yog	३)
श	३)
क्ति	१)
क प्रायमर	१)
ाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
ताबदार मोती	२)५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 1725

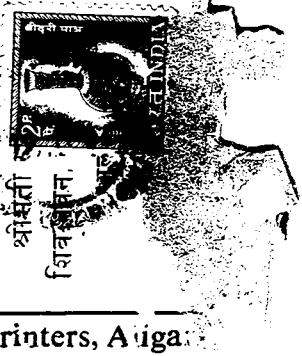

सम्पादक — प्रभुदयाल मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक —
श्रीमती
शिवभवन,

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh